आज की मुरली का सहज सार ---------- Date: 20-06-2014

बाबा ने आज कहा, तुम बच्चे आपस में रुहानी भाई-भाई हो, तो तुम्हारा एक-दो से अति रुहानी प्यार होना चाहिए. तुम्हें प्रेम से भरपूर गंगा बनना हैं. कभी भी आपस में लड़ना-झगड़ना नहीं.

हम परमपिता-परमात्मा शिवबाबा के बच्चे, ब्रह्मा के मुख- वंशावली, ब्राह्मण कुलभूषण ईश्वरीय संतान हैं. स्वयं भगवान अभी संगमयुग पर हम बच्चों कि बाप बनकर पालना करता हैं, टीचर बनकर पढ़ाता हैं और सद्गुरु बन हम आत्माओं का वरदानों से श्रृंगार करता हैं. हम बच्चों को बाबा ने कहा हैं तुम अगर मेरी श्रीमत् पर चल कर पवित्र रहकर दैवी-गुण धारण करेंगे तो बाबा हमें अपने नैनों पर बैठा कर लेके जायेंगे.

बाबा ने आज कहा, फिर भी कई सेन्टर के बच्चे हैं जो आपस में एक-दूसरे से लून-पानी हो पड़ते हैं तो वह खुद का ही नुकसान करते हैं.

ईश्वरीय बच्चों में आपस में लून-पानी होने के कारण –

- ईश्वरीय बच्चों में संगठन का अभाव.
- ईश्वरीय बच्चों में बहुत ज्यादा मत-मतांतर और मतभेद.
- ईश्वरीय बच्चों में आत्मिक स्थिति का अभाव.
- ईश्वरीय बच्चों में ज्यादा तर "में-पन या मेरा-पन" -- में सबसे बडा हूं, ये मेरा सेंन्टर हैं, यहाँ तो मेरा ही चलेगा, मेरी बात ही माननी पड़ेगी.
- ईश्वरीय बच्चों के आपस में एक-दूसरे के बारे में पहले से बंधे हुए गलत ख़याल, ये तो एसी ही है या वह तो ऐसा ही है.

- ईश्वरीय बच्चों के आपस में एक-दूसरे के लिए भाई-भाई की वृति का अभाव
- ईश्वरीय बच्चों में निमित भाव का अभाव.

ईश्वरीय बच्चों को आपस में कैसे रहना चाहिए –

- ईश्वरीय बच्चों में निःस्वार्थ भाव हो. निःस्वार्थ का मतलब होता हैं मेरा कोई भी स्वार्थ ना हो. मैं यज्ञ सेवा कर रहा हूं, ये एक ही भाव हो.
- ईश्वरीय बच्चों में निमित भाव हो. ये बाबा की सेवा हैं. बाबा ने मुझे निमित बनाया हैं.
- ईश्वरीय बच्चों में एक-दूसरे प्रति कोई भी विकल्प (negative thoughts) ना हो.
- ईश्वरीय बच्चों में एक-दूसरे प्रति कोई भी व्यर्थ संकल्प भी ना हो.
- ईश्वरीय बच्चों में एक-दूसरे प्रति हार्मोनियस, भाई-भाई की वृति हो.
- ईश्वरीय बच्चों में विश्व कल्याण की भावना हो.
- ईश्वरीय बच्चों में ईश्वरीय सेवा में छोटे-छोटे मतभेद तो होते ही हैं, लेकिन मन-भेद ना हो.

हम सब जानते हैं भगवान आये हैं हम बच्चों को सतयुग के लायक बनाकर, सतयुग में ले जाने के लिए, तो हमें पुरुषार्थ कर लायक भी बनना ही हैं.

ॐ शांति.

Pls. provide your feedback to Atma Bhai on email – a.brahmin.soul@gmail.com